

# एंटीबायोटिक प्रतिरोध पर वैश्विक पहल की ज़रूरत

डॉ. सुशील जोशी

पिछले माह विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सूक्ष्मजीवों में एंटीबायोटिक प्रतिरोध की समस्या पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करके सबको चौंका दिया है। वैसे भी चिकित्सा जगत में यह बात काफी समय से चल रही थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि यदि हम एंटीबायोटिक प्रतिरोध की समस्या से निपटने में नाकाम रहते हैं, तो हम वापिस उस युग में पहुंच जाएंगे जब छोटी-मोटी बीमारियां, घाव भी जानलेवा साबित होते थे। इसके अलावा सर्जरी भी एक मुश्किल चीज़ बन जाएगी।

देखा जाए तो एक मायने में प्रतिरोध की समस्या जलवायु परिवर्तन की समस्या से ज़्यादा गंभीर है। कई दवाइयां जो अभी कुछ वर्षों पहले तक जीवन-रक्षक थीं, आज बेकार हो चुकी हैं। जैसे टायफाइड (मोतीझरा) के खिलाफ कारगर दवा क्लोरेम्फिनेकोल अब कई देशों में नाकाम साबित हो रही है। इसी प्रकार से निहायत दवा-प्रतिरोधी टीबी, मेथिसिलिन प्रतिरोधी स्टेफिलोकोकस, बहु-औषधि प्रतिरोधी ई. कोली

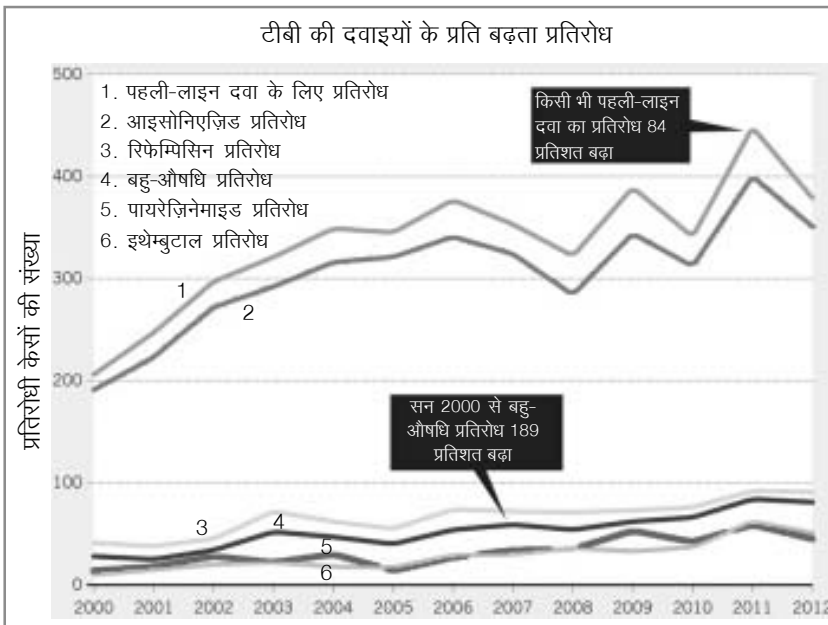
वगैरह जन स्वास्थ्य के लिए खतरा बनकर उभरे हैं। मलेरिया की दवा फाल्सीपेरम परजीवी पर काम नहीं करती है। एड्स वायरस पहली पंक्ति की वायरसरोधी दवाइयों का प्रतिरोध हो चला है। यानी कई एंटीबायोटिक, एंटीवायरल, एंटी-पैरासिटिक तथा फंफूंद-रोधी दवाइयों के खिलाफ प्रतिरोध सामने आया है।

यदि समस्या को उसके समस्त आयामों में देखें तो पता चलता है कि इन दवाइयों की अनुपस्थिति में सामान्य चिकित्सा, कैंसर का उपचार, अंग प्रत्यारोपण वगैरह के अलावा कृषि और पशुपालन भी खटाई में पड़ जाएंगे। समस्या की विकरालता को देखते हुए इस पर विश्व स्तर पर जो प्रतिक्रिया सामने आई है वह काफी कमज़ोर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पिछले माह जाकर स्वीकार किया कि मामला अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य नियमन के दायरे में आता है। यदि इस नियमन को सूक्ष्मजीव-रोधी दवाइयों पर लागू किया जाए, तो 196 सदस्य देशों को इन दवाइयों और इनके खिलाफ प्रतिरोध

की निगरानी और रिपोर्टिंग की व्यवस्था बनानी होगी।

समस्या की व्यापकता को देखते हुए कई वैज्ञानिकों ने मांग की है कि जलवायु परिवर्तन पर बनी अंतरसरकारी पैनल की तर्ज़ पर ही एक पैनल का गठन किया जाना चाहिए ताकि इस मामले में त्वरित कार्रवाई की जा सके।

एंटीबायोटिक



प्रतिरोध के संदर्भ में कुछ प्रमुख कारण पहचाने गए हैं। इनमें से पहला है इन दवाइयों का दुरुपयोग व अति-उपयोग। दूसरा है पशुओं की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एंटीबायोटिक दवाइयों का उपयोग।

मसलन, स्कैंडिनेवियाई देशों और नेदरलैण्ड में एंटीबायोटिक दवाइयों के प्रिस्क्रिप्शन सम्बंधी सख्त नीतियां मौजूद हैं और इन देशों में एंटीबायोटिक के खिलाफ प्रतिरोध भी सबसे कम सामने आया है। अलबत्ता, अन्य विकसित देशों में एंटीबायोटिक औषधियों के इस्तेमाल में कोई कमी नहीं आई है। और विकासशील देशों में तो इन औषधियों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। जैसे 2005 से 2010 की अवधि में भारत में मंहंगी एंटीबायोटिक औषधियों की खपत दुगुनी हो गई और मिस्र में तीन गुनी हो गई। कहते हैं कि इस वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान बगैर प्रिस्क्रिप्शन के होने वाली बिक्री का है।

कई देशों में, खासकर यूएस में, मनुष्यों के बराबर ही एंटीबायोटिक का इस्तेमाल पशुओं में भी होता है। पशुओं में इन दवाइयों का उपयोग किसी संक्रमण से लड़ने के लिए नहीं बल्कि उनकी वृद्धि को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। युरोपीय संघ ने तो 2006 में जंतुओं की वृद्धि बढ़ाने में एंटीबायोटिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था मगर हालात में बहुत सुधार नहीं आया है। आशंका है कि यही प्रवृत्ति विकासशील देशों में दोहराई जाएगी।

प्रतिरोध की समस्या से निपटना है तो कई क्षेत्रों में तालमेल से कदम उठाने होंगे। इनमें चिकित्सक, पशु चिकित्सक, मरीज़, किसान वगैरह को शामिल करना होगा।

जब तक विश्व स्तर पर बड़े प्रयास नहीं किए जाते तब तक कुछ कदम तो तत्काल उठाए जा सकते हैं। जैसे, जो डॉक्टर अक्सर छोटी-मोटी बीमारियों (जैसे सर्दी-जुकाम वगैरह) के लिए एंटीबायोटिक लिखने के आदी हैं, उन्हें इस संदर्भ में स्पष्ट निर्देश दिए जाने चाहिए ताकि वे एंटीबायोटिक्स का संयमित इस्तेमाल करें। यूएस में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि ब्रॉकाइटिस जैसे लक्षणों में एंटीबायोटिक से कोई लाभ न मिलने के प्रमाणों के बावजूद 1996 से 2010 के बीच ब्रॉकाइटिस सम्बंधी प्रिस्क्रिप्शन्स में एंटीबायोटिक की संख्या बढ़ती गई।

मगर हमारे जैसे देश में सिर्फ डॉक्टरों से कहकर बात नहीं बनेगी क्योंकि हमारे यहां भारी मात्रा में एंटीबायोटिक्स की बिक्री बगैर प्रिस्क्रिप्शन के सीधे केमिस्ट द्वारा की जाती है। इस बिक्री पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है और लोगों को जागरूक बनाने के प्रयास भी ज़रूरी हैं।

इस संदर्भ में एक क्षेत्र है जहां वैज्ञानिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह क्षेत्र है मौजूदा एंटीबायोटिक्स का इस्तेमाल करने के तौर-तरीकों में सुधार। कई एंटीबायोटिक्स का उपयोग नए किस्म के मिश्रणों के रूप में किया जा सकता है। इसी प्रकार से अपने आणविक खज़ाने में से ऐसे एंटीबायोटिक्स खोजे जा सकते हैं जिनका उपयोग अलग-अलग रोगों के लिए विशिष्ट रूप से किया जा सके। इसके अलावा यदि हमारे पास ऐसे तरीके मौजूद हों, जिनकी मदद से यह पता लगाया जा सके कि किस मामले में एंटीबायोटिक के कारगर होने की संभावना नहीं है, तो इनके उपयोग में संयम बरत सकेंगे। *(स्रोत फीचर्स)*